राग गऊड़ी

गऊड़ी, गम्भीर प्रकृति का राग है। दुखी आत्मा, कृपा की विनती करती है और अपने अन्दर की खोज करती है, इसलिए इस राग में गुरू साहिब ने मन, मति, बुद्धि, आत्मा, मौत, मुक्ति आदि गम्भीर विषयों में, गुरबाणी उच्चारण की है। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में सब से अधिक बाणी इसी राग में है। सुखमनी साहिब और बावन अखरी, जीवन के सारे सार का निठकर्ष दर्शाती हैं। भक्त कबीर जी की सबसे ज्यादा बाणी इसी राग में है। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी का फुरमान है – 'xÅMh jkx ly[k.kh t [kle fpfr djbAA Hkk.k py lfrxj d ,lk lhxkj djbAA गऊड़ी के 11 प्रकार श्री गुरू ग्रन्थ साहिब जी में हैं।

गऊड़ी (भैरव अंग)

आरोह	–	स रे ग रे, म प, नी सं।
अवरोह	–	सं नी ध म प, ध प म ग, रे ग रे, स ऩी, स।
स्वर	–	ऋषभ और धैवत कोमल, अन्य शुद्ध, आरोह में 'ग' एवं 'ध' वर्जित
थाट	–	भैरव
जाति	–	औड़व–सम्पूर्ण
समय	–	रात का प्रथम प्रहर
वादी	–	ऋषभ
संवादी	–	पंचम
मुख्य अंग	–	म ध प, ध म प म ग रे, ग रे स ऩी, स।
स्वर विस्थार	–	1. स, ऩी ध़ ऩी, ध़ प़, प़ ऩी स, रे म ग रे, रे म ग रे, रे म प, ध प, ध म प म ग, रे ग रे, स ऩी, स। 2. स, रे ग रे, म प, ध प ध म प नी, ध प, म प नी सं, रें गं रें, सं नी, म प नी ध प, म ध प म ग रे ग, रे ग रे, ग रे स ऩी, ऩी रे स।

सलोक महला ३॥ (३११)

गउड़ी रागि सुलखणी जे खसमै चिति करेइ ॥ भाणै चलै सतिगुरू कै ऐसा सीगारु करेइ॥ सचा सबदु भतारु है सदा सदा रावेइ॥ जिउ उबली मजीठै रंगु गहगहा तिउ सचे नो जीउ देइ॥ रंगि चलूलै अति रती सचे सिउ लगा नेहु॥ कूड़ ठगी गुझी ना रहै कूड़ु मुलंमा पलेटि धरेहु॥ कूड़ी करनि वडाईआ कूड़े सिउ लगा नेहु॥ नानक सचा आपि है आपे नदरि करेइ॥१॥

गउड़ी महला ५॥ (२०१)

थिरु घरि बैसहु हरि जन पिआरे॥ सतिगुरि तुमरे काज सवारे॥१॥ रहाउ ॥ दुसट दूत परमेसरि मारे॥ जन की पैज रखी करतारे॥१॥ बादिसाह साह सभ वसि करि दीने॥ अंम्रित नाम महा रस पीने॥२॥ निरभउ होइ भजहु भगवान॥ साधसंगति मिलि कीनो दानु॥३॥ सरणि परे प्रभ अंतरजामी॥ नानक एट पकरी प्रभ सुआमी॥४॥१०८॥

गऊड़ी

(1) पंचम सवारी 15 मात्रा

LFkkbZ

								पप	म	गरे	ग	रे	सऩी	–रे
								गऊ	ड़ी	00	रा	0	गि0	0सु
म	–प	–म	गरे	ग	रे	स	–	नी़	सरे	म	प	–	–प	–नी
ल	00	0ख	णी0	0	0	0	0	जे	खस	मै	चि	0	0ति	0क
ध–	–	पम	गरे	ग	रे	–	स							
रेइ	0	00	00	0	0	0	0							
X			2				3				4		5	

vrjk

								म	प	नी	ध	प	–नी	–नी
								भा	णै	च	लै	0	0स	0ति
संसं	–सं	सं	नी	रें	सं	–	–	नी	नी	सं	नी	ध	प	–प
गुरू	00	0	कै	0	0	0	0	ऐ	सा	सी	गा	0	रु	0क
पप	–	पम	गरे	ग	रे	–	स							
रेइ	0	00	00	0	0	0	0							
X			2				3				4		5	

dhrZudkj HkkbZ xqjnso flag cVkyk

गऊड़ी

(2) तीन ताल

LFkkbZ%

								ग	रे	ग	रे	स	ऩी	स	रे
								थि	र	घ	रि	बै	0	स	हु
म	म	म	म	पप	म	ग	—	म	म	प	नी	सं	सं	सं	सं
ह	रि	ज	न	पिआ	0	रे	0	स	ति	गु	रि	तु	म	रे	0
नी	ध	प	म	म	प	म	ग								
का	ज	स	0	वा	0	रे	0								
x				2				0				3			

vUrjk%

								म	—	मम	म	प	प	नी	नी
								दु	0	सट	दू	0	त	प	र
सं	—	सं	सं	रें	नी	सं	—	नी	सं	नी	—	ध	—	म	प
मे	0	स	रि	मा	0	रे	0	ज	न	की	0	पै	0	ज	र
ग	—	म	ग	रे	ग	रे	स								
खी	0	क	र	ता	0	रे	0								
x				2				0				3			

dhrudkj çk- gjpUn flag